हैम्बर्ग विश्वविद्यालय में इस वर्ष का हिंदी गहन अध्ययन कोर्स सफलतापूर्वक संपन्न

राम प्रसाद भट्ट
हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी

पिछले वर्षों की भांति ही इस वर्ष भी अगस्त माह में डॉ. राम प्रसाद भट्ट के नेतृत्व में हैम्बर्ग विश्वविद्यालय में 'हिंदी गहन अध्ययन कोर्स' का आयोजन किया गया। इस बार यह कोर्स दो विभिन्न - बेसिक एवं इंटरमीडिएट - वर्गों के लिए आयोजित किया गया था जिसमें जर्मनी एवं अन्य योरोपियन देशों के विश्वविद्यालयों के 35 छात्र-छात्राओं तथा अन्य विद्यार्थियों, जो या तो विभिन्न विभागों अथवा कंपनियों के लिए काम कर रहे हैं या फिर अभी-अभी अपनी स्कूली शिक्षा ख़त्म करके निकले हैं, ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। 5 अगस्त से 23 अगस्त तक चले ये दोनों कोर्स 23 अगस्त 2013 को सफलतापूर्वक संपन्न हो गए। वास्तव में हैम्बर्ग विश्वविद्यालय में इस 'गहन हिंदी अध्ययन कोर्स' का आयोजन पिछले 12 वर्षों से हर वर्ष किया जा रहा है। हर्ष का विषय यह है कि यह कोर्स लगभग पूरे पश्चमी योरोप में अपनी तरह के एक ख़ास कोर्स के रूप में स्थापित हो चुका है जो भारत से संबंधित अध्ययन करने वाले संस्थानों के छात्र-छात्राओं में, ख़ासकरके भारत-विद्या के छात्र-छात्राओं में काफ़ी लोकप्रिय है। यह इस कोर्स की लोकप्रियता का ही परिणाम है कि इस वर्ष से कोर्स का आयोजन वर्ष में एक बार भारत में भी शुरू कर दिया गया है।

भारत में इस कोर्स का आयोजन फ़रवरी माह में महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के सहयोग से वर्धा में किया जाता है जिसका श्रेय निश्चित रूप से विश्वविद्यालय के कुलपति विभूतिनारायण राय एवं उपकुलपति प्रो. अरविंदाक्षन जी को जाता है, क्योंकि इन्हीं लोगों के निजी प्रयासों से यह कोर्स वर्धा आ रहा है। फ़रवरी 2013 में जर्मन, ऑस्ट्रियन, स्पेनिश एवं डच-फ्लेमिश विश्वविद्यालयों के 25 छात्र-छात्राएँ इस कोर्स के अंतर्गत डॉ. भट्ट के साथ वर्धा गए थे। अब फ़रवरी 2014 में 10 फ़रवरी से 28 फ़रवरी तक इस कोर्स का आयोजन दूसरी बार वर्धा में होगा।

हैम्बर्ग शहर एवं हैम्बर्ग विश्वविद्यालय का हिंदी-उर्दू से लगभग 99 वर्ष पुराना नाता है। 1914 में हैम्बर्ग में 'कॉलोनियल इंस्टिट्यूट' के नाम से एक भाषा संस्थान की स्थापना की गई थी जिसमें हिंदुस्तानी का अध्यापन किया जाता था। यह संस्थान हैम्बर्ग विश्वविद्यालय से कम से कम पाँच वर्ष पुराना है क्योंकि विश्वविद्यालय की स्थापना 1919 हुई थी जिसमें हिंदुस्तानी का अध्यापन 1920 में शुरू किया गया था। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् 1948 से विश्वविद्यालय में हिंदी का शिक्षण नियमित रूप से किया जा रहा है।

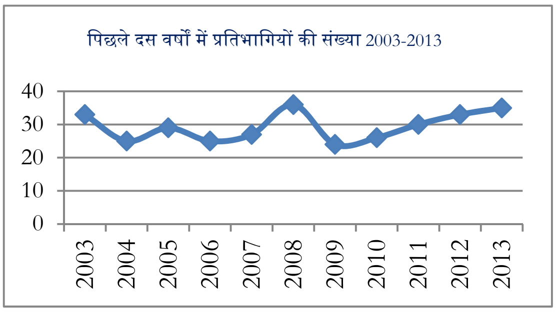

हिंदी गहन अध्ययन कोर्सों के आयोजन की पृष्ठभूमि में शुरुवात में यद्यपि मुख्य रूप से भारत-विद्या (इंडोलॉजी) के विद्यार्थी होते थे जो मुख्यतः डिग्री पाने के लिए हिंदी सीखते थे। किन्तु भारत में आर्थिक उदारीकरण होने तथा हिंदी फ़िल्मों का दायरा पश्चमी योरोप में फैलने और पश्चमी मीडिया में भारत की सकारात्मक एवं आशावादी तस्वीर प्रसारित होने के साथ ही भारत-विद्या, भाषा-विज्ञान एवं मानव-विज्ञान के गिने-चुने विद्यार्थियों के आलावा अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, क़ानून जैसे अन्य विषयों के विद्यार्थियों, निजी कंपनियों के कर्मचारियों एवं भारत में दिलचस्पी रखने वाले लोगों में हिंदी के प्रति आकर्षण बढ़ा है। जहाँ अधिकतर लोग पहले भारत को

सिर्फ़ साँपों, मदारियों, ग़रीबों एवं भुखमरों के नाम से जानते थे वहीं अब भारत की छवि में काफ़ी कुछ सुधार हुआ है। आज आपको हैम्बर्ग के एयरपोर्ट से बाहर निकलते समय हिंदी (देवनागरी) में लिखा - *धन्यवाद* - दिख जाएगा। इसी तरह से कभी-कभी कुछ बड़ी दुकानों में भी देवनागरी में *नमस्ते* या *धन्यवाद* या कुछ और लिखा हुआ दिख जाएगा। जहाँ आज से कुछ ही वर्षों पूर्व तक हिंदी की फ़िल्में सिर्फ़ सस्ती दुकानों में पायरेटेड कॉपी के रूप में मिलती थीं वहीं आज हिंदी फ़िल्मों की डीवीडीज़ सैटर्न एवं मीडिया मार्कट जैसी बड़ी इलेक्ट्रॉनिक्स दुकानों में बड़े डिस्प्ले में लगी मिलती हैं। 2004 से हिंदी फ़िल्में जर्मन टेलीविज़न पर भी दिखाई जाने लगी हैं।

बॉलीवुड ने पिछले कुछ वर्षों से जर्मन लोगों के दिलों को जीतने में, ख़ासकरके महिलाओं के, बहुत बड़ी सफलता हासिल की है। परिणामस्वरूप आज बॉलीवुड के नाम से जर्मनी में कपड़ों से लेकर खाने-पीने की चीज़ें तक बेची जा रही हैं। उदाहरण के तौर पर चिप्स के इस पैकेट को देखा जा सकता है। बॉलीवुड की हिंदी फ़िल्में निश्चित रूप से हिंदी के प्रसार में बड़ी भूमिका निभा रही हैं। मेरे विश्वविद्यालय के हिंदी के रेगुलर कोर्सों में कम से कम तीन छात्राएँ ऐसी हैं जिन्होनें बॉलीवुड फ़िल्मों की वजह से हिंदी सीखनी शुरू की। इसी तरह से हिंदी गहन अध्ययन कोर्स में भी हर वर्ष तीन-चार विद्यार्थी ऐसे होते हैं जो सिर्फ़ बॉलीवुड की वजह से हिंदी सीखते हैं।

इस वर्ष के हिंदी गहन अध्ययन कोर्स में भाग लेने वाले 35 प्रतिभागियों में अट्ठारह-उन्नीस वर्ष के स्कूली छात्र-छात्राओं से लेकर पश्चमी योरोप के विभिन्न विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी, वकील, इंजीनियर, पत्रकार एवं विश्वविद्यालयों के प्रोफ़ेसर तक शामिल थे। दुर्भाग्य से चौदह प्रतिभागियों के आवेदन विभिन्न समस्याओं की वजह से स्वीकार नहीं किए जा सके। मेरे लिए निजी तौर पर ख़ुशी की बात यह थी कि इस बार हिंदी गहन अध्ययन कोर्स में आठ ऐसे प्रतिभागियों ने भाग लिया जिन्होंने अभी-अभी बारहवीं की परीक्षा पास की है। यह वास्तव में मेरे लिए एक अनोखा अनुभव था।

कोर्स में भाग लेने वाले मिश्रित प्रतिभागियों हिंदी सीखने के प्रति लोगों में बढ़ रहे उत्साह इस बात का भी प्रमाण है कि समकालीन विश्व-व्यवस्था के विकास से विश्व के नागरिकों के एक जगह से दूसरी जगह विस्थापित होने, एक राष्ट्र के नागरिकों के दूसरे राष्ट्र में प्रवासित होने की प्रक्रिया तथा गति में वृद्धि होने, शहरीकरण में वृद्धि होने, एक ही शहर में बढ़ रहे विविध एवं बहुसाँस्कृतिक सामाजिक समूह के बढ़ने, तेज़ी से आ रहे टेक्नोलॉजिकल परिवर्तन, बढ़ रहे आर्थिक भूमंडलीकरण की वजह से दूसरी भाषाओं के ज्ञान तथा उससे सम्बंधित संस्कृतियों को समझने की योगता की आवश्यकता की विशिष्टता बढ़ी और सुदृढ़ हुई है। जिसका महत्त्व दुनिया की अनेकों राष्ट्र एवं राज्य सरकारें बख़ूबी समझ चुकी हैं। उल्लेखनीय है कि भाषिक योग्यता एवं साँस्कृतिक संवेदनशीलता को भूमंडलीकरण के इस दौर में आधुनिक विश्व-व्यवस्था की नई मुद्रा के रूप में देखा जा रहा है।

इस हिंदी गहन अध्ययन कोर्स का विशेष उद्देश्य है ऐसे छात्र-छात्राओं को हिंदी सीखने का अवसर प्रदान करना जो सेमेस्टर के दौरान समयाभाव की वजह अथवा किसी अन्य कारण से या तो हिंदी का कोर्स नहीं कर पाते या फिर ठीक से हिंदी नहीं सीख पाते हैं। इसके साथ ही व्यावसायिक एवं कामगार लोगों के लिए भी यह हिंदी सीखने का अच्छा अवसर है जिनको परिस्थीजन्य कारणों से हिंदी सीखने का मौक़ा नहीं मिलता। कहीं न कहीं योरोप में हिंदी के प्रचार एवं

प्रसार से भी इस कोर्स का प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष संबंध है। हिंदी का भाषिक ज्ञान भारतीय समाज तथा संस्कृति के एक बहुत बड़े हिस्से को समझने के लिए पहली सीढ़ी का काम करती है, और अब तो हिंदी भारत में लिंग्वा-फ्रांका के रूप में प्रयोग हो रही है। यह तो सर्वविधित है ही कि अगर आप हिंदी जानते हैं तो आप भारत के दो-तिहाई समाज को कम से कम एक सीमा तक समझने में सक्षम हो सकते हैं। इसके साथ ही एक पूरे सेमेस्टर की पढ़ाई तीन हफ़्तों में पूरा करने का फ़ायदा भी संभवतः इससे जुड़ा हुआ है। किन्तु इस कोर्स का मुख्य उद्देश्य हिंदी सीख रहे छात्र-छात्राओं एवं अन्य विद्यार्थियों को बोलचाल की हिंदी में प्रवीण करना है। इस पर हर वर्ष हमारा विशेष ध्यान रहता है कि विद्यार्थी बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी इच्छाएँ एवं विचार हिंदी में प्रकट कर सकें। इसके अतिरिक्त यह सिर्फ़ एक कोरा कोर्स नहीं है। इसमें भाषा साथ जुड़े सामाज-साँस्कृतिक तत्वों पर भी अच्छा ध्यान दिया जाता है। आमतौर पर योरोप के

अधिकतर विश्वविद्यालयों में हिंदी सीख रहे विद्यार्थियों को मुख्यतः हिंदी के व्याकरण, लिपि, वर्तनी (पढ़ना, लिखना) एवं अनुवाद से ही परिचित करवाया जाता है और अभ्यास के लिए सामान्यतः लिखित वाक्यों का प्रयोग किया जाता है। बोलचाल की हिंदी पर तो बहुत कम या फिर बिलकुल ध्यान नहीं दिया जाता। वास्तव में विश्वविद्यालय के रेगुलर कोर्स में एक हफ़्ते में सिर्फ़ तीन ही कक्षाएँ होती हैं जो कि किसी भी रूप से ठीक से भाषा सीखने के लिए काफ़ी नहीं है।

हिंदी गहन अध्ययन कोर्स के पाठ्यक्रम में व्यक्तिगत संवाद, सामूहिक परिचर्चा, डायलॉग दोहराना, डायलॉगों में कल्पना एवं रचनात्मकता का श्रृजन करना, स्पष्ट एवं शुद्ध उच्चारण, व्याकरण के नियमों का दैनिक जीवन संबंधी वाक्यों में प्रयोग करना, ग्राफ़िक्स एवं तस्वीरों के माध्यम से हिंदी सीखना, रेडियो रिपोर्ट्स एवं हिंदी फ़िल्मों के डायलॉगों का प्रयोग करना इत्यादि जैसे कुछ बिंदुओं पर ख़ास ध्यान दिया जाता है। जिसे विद्यार्थी बहुत पसंद करते हैं। इसके साथ ही अन्त्याक्षरी खेलना, हिंदी गाने गाना एवं हिंदी में नाटक खेलना भी प्रतिभागियों में जोश भरने में ख़ूब कामयाब रहते हैं। कोर्स में यद्यपि कुछ पाठ्यपुस्तकों का उपयोग किया जाता है किंतु अधिकतर शिक्षण सामग्री स्वयं अध्यापक ही तैयार करते हैं जिसमें प्रतिभागियों की ज़रुरत के अनुसार परिवर्तन भी किया जाता है। चार में से तीन अध्यापक-अध्यापिकाएँ हिंदी मातृभाषी हैं।

इस बार कोर्स में हिंदी फ़िल्म क्लिप्स के अलावा इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट मीडिया का भी उपयोग किया गया जिसने प्रतिभागियों में हिंदी सीखने के साथ-साथ भारतीय समाज एवं संस्कृति, भूगोल तथा इतिहास के प्रति भी उत्सुकता जागृत करने में अहम् भूमिका निभाई। इस सामाग्री का उपयोग प्रतिभागियों ने अपने व्यवसायों, विभागों एवं भारतीय शिक्षा प्रणाली संबंधी बातचीत तैयार करने में भी किया।

तीन हफ़्तों के इस कोर्स के दौरान भारत संबंधी साँस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों का भी आयोजन किया गया था, जिसके अंतर्गत हैम्बर्ग स्थित अफ़ग़ान-हिन्दू-मंदिर एवं गुरूद्वारे के कार्यक्रम प्रतिभागियों के आकर्षण के केंद्र रहे। प्रतिभागियों ने मंदिर एवं गुरूद्वारे की धार्मिक गतिविधियों को देखा तथा सामाजिक गतिविधियों में भाग लेकर हैम्बर्ग में रह रहे अफ़ग़ान हिन्दुओं एवं सिख परिवारों के हैम्बर्ग, अफ़ग़ानिस्तान तथा भारत में धार्मिक एवं सामाजिक जीवन संबंधी जानकारियाँ हासिल कीं और भारतीय पकवानों का भरपूर आनंद लिया।

कुछ प्रतिभागी तो अपने परिवारिक सदस्यों के साथ इन मंदिरों में पहुँचे। इसके आलावा भारतीय समाज एवं हिंदी भाषा, आयुर्वेद तथा भारतीय समाज एवं एड्स पर छोटे-छोटे व्याख्यानों का आयोजन भी किया गया, जिनमें सभी प्रतिभागियों ने उत्साह के साथ भाग लिया और परिचर्चा में भागीदारी निभाई। भारतीय समाज एवं एड्स पर कोर्स की प्रतिभागी कारा स्मिथ ने पॉवर पॉइंट के माध्यम से नागपुर में अपने अनुभवों के बारे में बताया। एक शाम को प्रतिभागियों ने हिंदी फ़िल्म *चेन्नई एक्सप्रेस* भी देखी।

कोर्स की समाप्ति लिखित एवं मौखिक परीक्षाओं के साथ की गई, जिसमें सभी प्रतिभागियों ने अच्छे अंकों के साथ सफलता हासिल की। परीक्षा परिणाम 55% से लेकर 97% तक रहा। औसत परीक्षा परिणाम लगभग 86.3 प्रतिशत रहा।

कोर्स के अंतिम दिन कक्षाओं के बाद सभी प्रतिभागियों को उनके प्रमाण-पत्र दिए गए और सब ने अध्यापकों के साथ मिलकर जलपान के दौरान कोर्स संबंधी प्रतिपुष्टियों पर चर्चा की और अपने-अपने सुझाव दिए। कुछ प्रतिभागियों की लिखित प्रतिपुष्टियाँ बहुत दिलचस्प थीं। मैं यहाँ पर दो प्रभागियों की प्रतिपुष्टियों के कुछ अंश देना चाहूँगा, जो अपने-अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ हैं। अन्य प्रतिक्रियाएँ एवं सुझाव *हिंदी गहन अध्ययन कोर्स* की वेबसाइट पर पढ़े जा सकते हैं। एक महिला प्रतिभागी एस. मित्तर, जो अपनी एक कंपनी चलाती हैं और जिनके पिता तो भारतीय हैं और माता जर्मन, लिखती हैं – "मैं आपकी बहुत आभारी हूँ कि मुझे इस बहुत दिलचस्प एवं अति

महत्त्वपूर्ण कोर्स में भाग लेना का अवसर मिला। मुझे पक्का विश्वास है कि मेरे जैसे दूसरे प्रतिभागियों के लिए भी यह कोर्स उतना ही ख़ास और दिलचस्प था मैं आपको तहेदिल से बताना चाहती हूँ कि भारतीय समाज, संस्कृति एवं भाषा के बारे में जितना मैंने इस कोर्स में सीखा उतना शायद मैंने पिछले बीस वर्षों में भी नहीं सीखा था।"

पुर्तगाल से आए डॉ. अंतोनियो एदुआर्दो बर्रेन्तो कोर्स के बारे में अपने विचार कुछ इस तरह प्रकट करते हैं – "मेरे विचार से हैम्बर्ग विश्वविद्यालय का हिंदी गहन अध्ययन कोर्स बहुत ही उत्कृष्ट है। कोर्स की परिकल्पना एवं आयोजन बहुत अच्छा था, कक्षाएँ भाषा सीखने के दृष्टिकोण से बहुत दिलचस्प और प्रभावपूर्ण थीं और इसके साथ ही पाठ्येत्तर कार्यक्रम भी था जिसने हिंदी की कक्षाओं के संपूरक का काम किया। मैं ज़ोर देकर कहना चाहूँगा कि हिंदी गहन अध्ययन कोर्स की यादें मेरे दिलो-दिमाग में लंबे समय तक रहेंगी। अध्यापकों का पूर्ण प्रोफ़ेशनलिज़्म एवं उनका दोस्ताना व्यवहार भी मुझे हमेशा याद रहेगा। मैं आप सभी को बधाई देता हूँ!"

पिछले कुछ वर्षों में इस कोर्स ने कई उतार-चढ़ाव देखे हैं, लेकिन मुझे ख़ुशी है कि कठिन परिस्थितियों में भी यह कोर्स निर्बाध रूप से आगे बढ़ रहा है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में इसका महत्त्व और बढ़ेगा।

चूँकि भूमंडलीकरण एवं तेज़ गति से बदलते हुए समाज-साँस्कृतिक एवं टेक्नोलॉजीकल परिवर्तनों के परिपेक्ष में सिर्फ़ व्याकरण एवं अनुवाद शिक्षण पद्धतियाँ हिंदी शिक्षण के ध्येय को पूरा करने में सक्षम नहीं हैं। इसलिए समय-समय पर कोर्स की रूपरेखा एवं शिक्षण पद्धतियों में परिवर्तन किया जाना ज़रूरी है। कोर्स की गुणवत्ता एवं भाषा के अध्ययन को अधिक प्रभावपूर्ण बनाने के लिए नई एवं आधुनिक शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग करने की कोर्स के अध्यापकों की पूरी कोशिश रहती है जिसे भविष्य में और सुदृढ़ता के साथ ध्यान में रखा जाएगा। इसमें कोर्स के प्रतिभागियों द्वारा दिए गए सुझावों का भी पूरा ध्यान रखा जाता है।

कोर्स को सफलता पूर्वक संचालित करने में हमेशा की तरह इस बार भी सभी अध्यापकों एवं प्रतिभागियों ने अहम् भूमिका निभायी। मेरी ओर से सभी को हार्दिक बधाइयाँ एवं शुभकामनाएँ!

– डॉ. राम प्रसाद भट्ट
22 सितम्बर 2013

Dr. Ram Prasad Bhatt
University of Hamburg
Dept. of Culture and History of Indian & Tibet
Alsterterrasse 1
20354 Hamburg, Germany
Email: Ram.Prasad.Bhatt@uni-hamburg.de